मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

ग्रामीण विद्युतिकरण के नाम पर बड़ा घोटाला प्रशासन की नालायकी के चलते हथीन फ़िर भड़का 3

साहित्य से दोस्ती
मोदी संदेश: जो कुछ भी करेंगे निडरता से डंके की चोट पर करेंगे 5

महान लोकतंत्र के शिकार
लाईफ ओके चैनल, समाज के भले मानुष और सामाजिक परिवर्तन 6

पुलिस कमिश्नर सुभाष यादव-बरसों बाद शहर को मिला काम करने वाला 8

वर्ष 28 अंक 1 फरीदाबाद, रविवार, 16-30 नवम्बर 2014 फोन : - 9999595632 ₹ 2

जब जे ई रामपाल काबू नहीं आया तो 'संत' रामपाल तुम्हें औकात दिखायेगा ही

सिंचाई विभाग का जे ई रहते हुए रामपाल ने सरकार का और सरकारी अनुशासन को हमेशा ठेंगे पर रखा। अब जब वह 'संत' बन चुका है और उसके सामने राम रहीम और आसाराम जैसे शातिरों का उदाहरण है, तो वह भला लुंज-पुंज सरकारों के कैसे काबू आयेगा।

मजदूर मोर्चा, चंडीगढ़ ब्यूरो

रामपाल किसी जमाने में हरियाणा सिंचाई विभाग में बतौर जे-ई-नौकरी करता था। भ्रष्टाचार के आरोप में डिसमिस हो गया तो 'संत' बन गया। रोहतक ज़िले के करोंथा गांव में सतलोक नाम से आश्रम खोल दिया। तमाम पंचतारा विलासिताओं से परिपूर्ण यह आश्रम उन युवतियों के लिये एक अच्छा मिलन स्थल बन गया जो अन्यथा घर की चारदिवारी तथा खेत खलिहान की फटीक से बाहर नहीं निकल पातीं थीं।

धर्म के नाम पर जुड़ती इस बढती जमात से अन्य धार्मिक दुकानों को तकलीफ़ होने लगी। घमासान युद्ध हुआ। भारी संख्या में पुलिस आई। अनेकों घायल हुए। एक-दो मरे भी। 'संत' की गिरफ़्तारी हुई।

ज़िला कोर्टों में पेशी के दौरान समर्थकों ने जम कर बबाल काटा। कोर्टों ने जमानत भी जल्दी दे दी। रोहतक ज़िले के लोगों ने जब इसे करोंथा वाले आश्रम में घुसने नहीं दिया तो हिसार ज़िले के बरवाला गांव में 'संत' ने एक और किलेनुमा आश्रम बना लिया।

जिस हाई कोर्ट ने इसे जमानत पर छोड़ा था उसी को अब इसने ठेंगा दिखा दिया है। राज्य के गृह सचिव तथा पुलिस महानिदेशक को कड़ी फ़टकार लगी। हज़ारों की संख्या में पुलिस व अर्ध सैनिक बल हफ़्तों से 'संत' को पकड़ने के लिये उस किले के बाहर पड़े हैं जिसकी सुरक्षा के लिये लाख से अधिक चेले-चेलियां तैनात हैं। कुछ चेले तो बाकायदा स्वचालित हथियारों से भी लैस हैं। ये लोग खुलकर सत्ता, हाई कोर्ट व उसकी पुलिस को ललकार कर उसकी औकात बता रहे हैं।

दरअसल सत्ता को ललकारने वाला यह कोई पहला या आखरी 'संत' नहीं है। जिस तरह के गिरोह राजसत्ता को चला रहे हैं और जिस ढंग से चला रहे हैं, उसके चलते इस तरह के 'संतों' का पैदा होना अवश्म्भावी है। 'संत' भिंडरावाला इसी व्यवस्था द्वारा पैदा व पाला-पोसा गया था। सिरसा वाले राम रहीम जिस पर अनेकों आपराधिक मुकदमे चल रहे हैं, से वोटों की भीख मांगने स्वयं भाजपा अध्यक्ष अमितशाह जाते हैं। महान व्यभिचारी आसाराम के समर्थन में अनेकों भाजपाई खुल कर सामने आ गये थे जब उस पर शिकंजा कसा जाने लगा था। इस देश में शायद ही कोई संत या बाबा ऐसा हो जिसकी चौखट पर माथा रगड़ने कोई न कोई छोटा-बड़ा नेता न जाता हो। फ़रीदाबाद के सिद्धदाता आश्रम में स्थानीय सांसद एवं मंत्री अन्य विधायकों के साथ जाकर माथा रगड़ कर आशीर्वाद लेते हैं।

जनता, खासकर नासमझ जनता पर इसका प्रभाव पड़ना लाज़मी है। जब बड़े नेता तक आकर इनके चरणों में माथा रगड़ते हैं तो जनता क्यों पीछे रहने लगी? फ़िर इन 'संतों' के पास तो काम ही एक है जनता को बहकाना-फुसलाना जबकि राजनेताओं के पास तो और भी बहुत से काम होते हैं। ऐसे में ये 'संत' लोगों को अपने साथ पूरी तरह से जोड़ पाने में कामयाब रहते हैं। यहां गौरतलब बात यह भी है कि राजसत्ता को चलाने वालों पर तरह-तरह के आरोप लगते हैं जो वास्तविक एवं सच्चे भी होते हैं। जिनसे इनकी साख एवं विश्वसनीयता जनता के बीच घटते-घटते रसातल तक पहुंच जाती है। दूसरी और 'संत' लोग भी किसी तरह कम न होते हुए अपने दोषों को धर्म एवं आडम्बर की चादर से ढके रहते हैं।

वैसे भी इतिहास गवाह है राजसत्ता का भोग करने वाले सदा से ही धर्मसत्ता का सहारा लेते रहे हैं। जनता के मन में राजा का भय बनाये रखने के लिये धर्म हमेशा से ही एक कारगर हथियार रहा है। आज बेशक राजसत्ता एवं धर्मसत्ता के रूप बदल गये हैं परन्तु चलते दोनों ही एक दूसरे के सहारे से हैं। इनमें झगड़ा केवल तब होता है जब दोनों अपनी-अपनी सीमायें लांघ कर एक दूसरे के अधिकारक्षेत्र में अतिक्रमण करने का प्रयास करते हैं।

ख़बर दार

असली दामाद तो आप सभी का डी एल एफ है खट्टर जी !

चुनाव से पूर्व करीब एक वर्ष तक जो भाजपा बहुत उछल-उछल कर राबर्ट वाड्रा तथा हुड्डा के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के दावे कर रही थी अब शान्त है।

सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ट वाड्रा को करोड़ों का लाभ पहुंचाने के लिये कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने डी एल एफ़ नामक रीयल एस्टेट कम्पनी से मिल कर जो भूमि घोटाला किया था वह अब ठंडे बस्ते में चला गया है। प्रदेश के एक वरिष्ठ आई ए एस अधिकारी खेमका द्वारा पूरा घोटाला जनता के सामने लाने पर, हुड्डा सरकार उन्हें जितना प्रताड़ित कर सकती थी, किया।

चुनाव से पूर्व करीब एक वर्ष तक जो भाजपा बहुत उछल-उछल कर राबर्ट वाड्रा तथा हुड्डा के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के दावे कर रही थी अब शान्त है। हरियाणा सरकार के वित्तमंत्री बनते ही कैप्टन अभिमन्यु ने भी इस घोटाले पर कड़ी कार्यवाही की बात तो जरूर दोहराई थी परन्तु करने धरने के नाम पर अभी तक की कार्यवाही जीरो बटा जीरो ही है। वैसे मोदी जी इशारा भी दे चुके हैं कि वे बदले की भावना से किसी के ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही नहीं करेंगे। यानी कि वे अथवा उनकी पार्टी यदि इस घोटाले में कोई कार्यवाही करेंगे तो वह सोनिया तथा हुड्डा के ख़िलाफ़ बदले की भावना से की गयी कार्यवाही समझी जायेगी। बात भी ठीक है, आज अगर ये बदले की भावना से कोई कार्यवाही करेंगे तो कल को बदला तो वे भी उतारेंगे ही, क्योंकि घेटाले तो इनको भी करने ही हैं। इसलिये भाजपा कांग्रेसी घोटालों को नहीं छेड़ेगी तो आने वाले वक्त में कांग्रेस इनको नहीं छेड़ेगी यानी जीओ और जीने दो, खाओ और खाने दो।

इसके अलावा भाजपा द्वारा इस घोटाले को न छेड़ने का दूसरा कारण है खुद डी एल एफ कम्पनी। विदित है कि इस तरह की तमाम कम्पनियों की तरह डी एल एफ भी सभी राजनीतिक दलों को भरपूर चन्दा देती है। चन्दे के अलावा इन पार्टियों के नेताओं के काले धन का निवेश एवं सुरक्षित प्रबन्धन भी करती हैं। यदि भाजपा सरकार इस घोटाले को छेड़ेगी तो वाड्रा और हुड्डा का तो कुछ बिगड़ेगा या नहीं परन्तु डी एल एफ के गर्भ में छिपे सभी भाजपाई नेताओं के राज सामने जरूर आ जायेंगे। इस लिये इन हालात के मद्देनज़र, जनता को बहकाने के लिये बयानबाजियां तो जरूर खट्टर साहब व उनके मन्त्री करते रहेंगे पर कोई ठोस कार्यवाही करने की हिम्मत ये लोग कभी नहीं जुटा पायेंगे। मोदी सरकार और तो क्या करेगी या नहीं परन्तु डीएलएफ से उनका लगाव एवं रिश्तेदारी तो इस बात से भी समझ में आती है कि न्यायमूर्ति एसएन ढींगड़ा की अध्यक्षता वाले सीसीआई (भारतीय प्रतियोगिता आयोग) द्वारा इस पर लगाया गया 630 करोड़ का जुर्माना अभी तक सरकार वसूल नहीं कर सकी। कम्पनी पर यह जुर्माना उसकी अनैतिक एवं छलभरी गतिविधियों के लिए किया गया था।

भस्मासुर ऐसे ही तो बनते आये हैं

हत्यारोपी बाबा के दरबार में 35 विधायक पहुंचे मत्था टेकने

भाजपा हाई कमांड का आदेश तो था कि मुख्यमंत्री सहित सभी 47 विधायक डेरा सच्चा सौदा के बाबा राम रहीम के दरबार में मत्था टेकने जायें। परन्तु मुख्यमंत्री को किसी सयाने अफ़सर ने एन आखिरी वक्त पर सलाह दी कि इस तरह सारी सरकार तथा पूरे विधायक दल का जाना उचित नहीं होगा। इसलिये 47 में से 35 विधायक एवं मंत्री ही मत्था टेकने 12 नवम्बर को उसके सिरसा स्थित दरबार में पहुंचे। इनका नेतृत्व कर रहे थे हरियाणा के पार्टी प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय। इन लोगों ने बंद कमरे में बाबा के चरणों में क्या-क्या अर्पण किया, क्या चरणवंदना की तथा क्या सौदेबाजियां की उसका तो पता नहीं लेकिन बाहर आकर केवल इतना कहा कि वे चुनाव जिताने में बाबा द्वारा दी गयी मदद का धन्यवाद करने गये थे। सुधी पाठक जानते होंगे कि इस बाबा

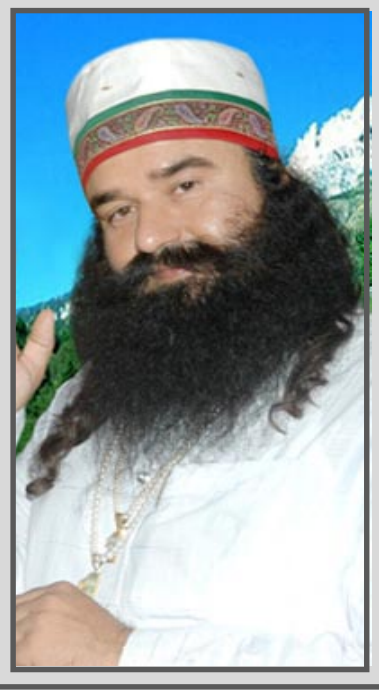

पर एक पत्रकार की हत्या तथा बलात्कार सहित कई आपराधिक मुकदमे अदालतों में लम्बित हैं और बाबा खुद जमानत पर है जो कि इसी पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने दी थी जो आज 'संत' रामपाल की पेशी के लिये परेशान हुई जा रही है। जिस राज्य की पूरी सरकार ही जहां मत्था रगड़ती हो तो वहां की जनता अगर उसे भगवान मानने लगे तो ताज्जुब क्या है? और यही जनता अगर कल को बाबा के आदेश पर इसी सरकार के सामने हथियार उठा कर खड़ी हो जाय तो फ़िर जनता को दोषी कैसे ठहराया जा सकता है? आज यही स्थिति रामपाल मामले में बनी हुई है। सरकार एवं सरकार चलाने वाले गिरोह पहले इन बाबाओं के रूप में भस्मासुर पैदा करते हैं और जब वे इन्हीं को भस्म करने को दौड़ते हैं तो सरकार चलाने वाले मुंह ताकते रह जाते हैं।